बलभद्र कृत शिखनख।

केश वर्णन कवित्त।

मरकत-सूत किधौं पन्नग के पूत किधौं राजत अभूत तमराज कैसे तार हैं। मखतूल गुन ग्राम सोभित सरस स्याम काम मृग कानन कि कुहू के कुमार हैं ॥ कोप की किरिनि कैधों नीलनलिनी के तंतु उपमा अनन्त चारु चँवर सिँगार हैं। कारे सटकारे भीजे सोंधे सो सरस बास ऐसे बलभद्र नवबाला तेरे बार हैं ॥ १ ॥

पाटी वर्णन।

दरस दरस को परस होत बलभद्र कैधौं है सरस साला सनि सुरभान को। रसराज पच्छी के उभय पच्छ राजै कैधौं छाहँ बैठ्यो छपाकर मेचक बिलान को ॥ तम के पटल लपटाने हेमकूट सों कै सघन कादम्बिनी कसौटी पंचवान की। पाटी तेरी तरुनी जुगल ऐसी